SHRIHARSH AUR VATSRAJ UDAYAN

श्रीहर्ष और वत्सराज उदयन

Dr. Ritesh Prashad Tamta

असिस्टेन्ट प्रोफेसर संस्कृत राजकीय महाविद्यालय,जैंती (अल्मोड़ा)

ABSTRACT

संस्कृत साहित्य विश्व के समृद्ध साहित्यों में से एक है। भारतीय संस्कृति, सभ्यता एवं इतिहास का परिचय संस्कृत साहित्य से ही मिलता है। भारतीय इतिहास में छठी शताब्दी में चीनी यात्री ह्वेनसांग भारत आया था। ह्वेनसांग ने भारत भ्रमण करके राजा हर्श के राज्य को समृद्ध, सम्पन्न एवं खुशहाल बताया था। महाराज हर्श की ख्याति दूर–दूर तक फैली हुयी थी; हर्श के राजदरबार में महाकवि बाणभट्ट जैसे राजकवि थे। राजा हर्श का राज्य–विस्तार उत्तर में हिमालय से लेकर पूर्व में बंगदेश तक विस्तृत था। महाराज हर्श को राज्य के प्रशासनिक एवं राजकार्यो से समय मिलने पर साहित्य रचना करते थे। बाणभट्ट द्वारा उनके जीवन पर आधारित हर्शचरितम् ग्रन्थ की रचना की थी, तभी से साहित्य रचना के प्रति उनकी रुचि उत्पन्न हुई। उन्होंने तीन नाटिकाओं रत्नावली, प्रियदर्शिका और नागानन्द की रचना की। अतः श्रीहर्श एक लोककल्याणी, कवि, इतिहास प्रसिद्ध राजा थे।

वत्सराज उदयन उज्जयिनी के राजा थे। संस्कृत के अनेक नाटकों, नाटिकाओं और कथाओं में उनका नाम वर्णित है। वत्सराज उदयन धीर, पराक्रमी, सौन्दर्यशाली, वीर, कला प्रेमी, संगीत प्रेमी राजा थे। वत्सराज उदयन ने प्रद्योत राजकुमारी वासवदत्ता का अपहरण कर गन्धर्व विवाह किया, यह कथा लोक मे अत्यधिक प्रसिद्ध है। उदयन की लोकप्रियता के कारण ही उन पर आधारित अनेक संस्कृत नाटकों, नाटिकाओं एवं कथाओं की रचना की गई। जिनमें स्वप्नवासवदत्तम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायणः, रत्नावली, प्रियदर्िका एवं तापसवत्सराजः अत्यधिक प्रसिद्ध है। उदयन भरतवंश के धीरललित राजा थे। भारत के चक्रवर्ती सम्राटों में वत्सराज उदयन का नाम भी प्रसिद्ध है। उदयन इतिहास प्रसिद्ध कुशल राजनीतिज्ञ राजा थे।

महत्त्वपूर्ण शब्द ॥ वत्सराज उदयन, महाकवि हर्श, स्वप्नवासवदत्तम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायणः, रत्नावली, प्रियदर्शिका एवं तापसवत्सराजः, राजा हर्श।

१. महाकवि हर्ष का जीवन परिचय एवं स्थितिकाल :

महाकवि हर्श का संस्कृत रूपककारों में प्रमुख स्थान है। संस्कृत साहित्य के निर्माताओं में कम ही साहित्यकार ऐसे हैं। जिनकी जीवनकथा के विशय में विद्वानों में मतभेद नहीं है। महाकवि हर्श की जीवन कथा प्रमाणिक तथ्यों के आधार पर उपलब्ध है। महाकवि बाणभट्ट ने हर्शचरित के अगले पाँच उच्छवासों में इनका पूरा इतिहास या जीवन परिचय दिया है।

महाकवि हर्श के पूर्वजों में पुश्पभूति नामक एक परम भौव राजा हुए। जिनका राज्य सरस्वती नदी के किनारे कुरूक्षेत्र के समीप थानेसर नामक एक प्रसिद्ध नगर में विस्तृत था। प्रभाकर वर्धन का यशोमती नामक राजकन्या से विवाह संस्कार हुआ। राजा प्रभाकर वर्धन एवं रानी यशोमती की तीन संतानें उत्पन्न हुई। जिनमें दो पुत्र तथा एक कन्या रत्न की प्राप्ति हुई। राजा प्रभाकर के पुत्रों का नाम क्रमशः राज्यवर्धन तथा हर्शवर्धन और कन्या का नाम राज्यश्री था।[1]

महाकवि हर्श के पिता का नाम प्रभाकरवर्धन तथा माता का नाम यशोमती था। महाकवि हर्श का जन्म ६०६ ई0 में राज परिवार में हुआ था। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने लिखा है– "कि हर्श एक महान वीर तथा बुद्धिमान् कुशल राजा थे। उनका राज्य बहुत समृद्ध तथा निरूपद्रव रहा, साथ ही प्रजा सुखी,सम्पन्न एवं सन्तुश्ट थी। उन्होंने सिंहासनासीन होने के पश्चात् ही समस्त उत्तरी भारत को जीतकर महाराजाधिराज की उपाधि प्राप्त की और तभी से एक नये संवत्सर की स्थापना की गयी।"[2]

जब हर्शवर्धन राजसिंहासन पर बैठे उस समय उनकी आयु केवल 16 वर्श की थी। इनके दरबार में बाणभट्ट तथा मयूर जैसे श्रेश्ठ कवि थे। इनके भाासन काल में ही प्रसिद्ध चीनी यात्री एवं पर्यटक हवेनसांग भारत आया था। उसके अनुसार हर्श का राज्य विस्तार हिमालय से नर्मदा तथा मालवा, गुजरात और कुछ दूर तक बंगदेश में भी था। राज्य में सुशासन व्याप्त था।[3]

कुछ विद्वान् बौद्धभिक्षु दिवाकर भीम से परिचय होने तथा नागानन्द नाटक में भगवान् बुद्ध की स्तुति करने के कारण हर्शदेव को बौद्ध धर्म का अनुयायी मानते हैं। लेकिन कुछ विद्वान् रत्नावली के मंगलाचरण को देखकर हर्शदेव को भौव या हिन्दू भौव धर्म का मानते हैं। क्योंकि इनके पिता तथा भाई भी परम भौव होने का गर्व रखते थे।[4]

महाराज हर्शवर्धन ने धार्मिक सभायें कीं तथा खुलकर दान दिया। वह अपने भाासन के अन्तिम अवस्था में धर्मप्रवृत्तिका, दानी तथा दयालु हो गये थे। एक राजा के रूप में उन्होंने ३५ वर्श का भाासनकाल पराक्रमी, बलशाली, कुशल राजनीतिकज्ञ और वीर योद्धा के रूप में किया। लेकिन भाासनकाल के अन्तिम अवस्था में चालुक्यवंशी राजा पुलकेशी ने उन्हें नर्मदा पार में राज्य विस्तार करने से रोका था।[5]

महाराजा हर्शदेव ऐतिहासिक पुरूश थे। अतः उनका समय सर्वथा निर्धारित है। महामहोपाध्याय गणपति शास्त्री तथा स्व0 पं0 रामावतारशर्मा ने एवं अन्य विद्वानों ने एकमत होकर उनका राज्यकाल ईस्वी सन् ६०६ से ६४६ तक स्वीकार किया है।[6]

(ब) महाकवि हर्ष की रचनाएँ :

संस्कृत साहित्य के सुप्रसिद्ध रूपककारों में महाकवि हर्श का वि िश्ट स्थान है। जिन्होंने अपने रूपकों से संस्कृत साहित्य के भण्डार को समृद्ध किया है। महाकवि हर्शदेव ने 4 चार ग्रन्थों की रचना की, उनमें से तीन रूपक प्रसिद्ध हैं। चौथा ग्रन्थ व्याकरण विशयक है जो आज तक उपलब्ध नहीं हो पाया है। उपलब्ध तीन रूपक इस प्रकार हैं।

१. प्रियदर्शिका (नाटिका)
२. रत्नावली (नाटिका)
३. नागानन्द (नाटक)[7]

२. वत्सराज उदयन का परिचय :
वत्सराज उदयन वत्सदेश, कौशाम्बी एवं उज्जयिनी राज्य के राजा थे। इनका जन्म भरत वंश में हुआ था। वह क्षत्रिय कुल में उत्पन्न अत्यन्त सौन्दर्यशाली, पराक्रमी, बुद्धिमान् राजा थे। उदयन समुद्र के समान गम्भीर–धीर एवं सुशीलता सम्पन्न, संगीत प्रेमी, कलाप्रेमी राजा थे। वह वीणा बजाने की कला में पारंगत थे। उनकी वीणा वादन की ख्याति दूर–देशों तक फैली हुयी थी। उदयन हृदय से कोमल, दयालु तथा दृढ़ निश्चयी हैं। यह प्रजा वत्सल अर्थात् प्रजा से प्रेम करने वाले हैं। प्रजा की सुख, समृद्धि और विकास पर विशेश ध्यान रखते थे। इसलिए उदयन की कथाएँ उज्जयिनी में अत्यधिक प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय हैं। उन्हें आज भी मनोरंजन और ज्ञानवर्धन के लिए सुना और पढ़ा जाता है।[8]

प्रद्योत उदयन के गुणों तथा स्वाभिमान से प्रभावित होकर कहता है– उत्सेकयत्येनं प्रकाशराजर्शिनामधेयो वेदाक्षरसमवायप्रविष्टो भारतो वंशः। दर्पयत्येनं दायाद्यागतो गान्धर्वो वेदः। विभ्रमयत्येनं वयस्सहजं रूपम्। विस्रम्भत्येनं कथममुत्पन्नोऽस्य पौरानुरागः।[9]

अर्थात् वेदों में जिसकी चर्चा हुई है। ऐसे भरत वंश में उत्पन्न तथा अपने कुल के अनुसार प्राप्त संगीत विद्या इसके अभियान को बढ़ा रही है तथा इसका प्रजा वत्सल होना इसको बहुत बड़ा विश्वास दिलाता है।

वह पाण्डवंशीय राजा भाशांक का पुत्र और साहस्त्रांक का पौत्र था। उसमें सभी राजोचित गुण विद्यमान है। उदयन कला प्रेमी, वीर, श्रेश्ठ पुरूश होते हुए भी विलासप्रिय राजा है। इस प्रकार उदयन सर्वगुण सम्पन्न धीर–ललित नायक है।[10]

रत्नावली नाटिका में वत्सराज उदयन की नायिका का नाम रत्नावली अर्थात् सागरिका है। वत्सराज उदयन की रत्नावली या सागरिका द्वितीय प्रेमिका और द्वितीय पत्नी हैं। उदयन का रत्नावली से दूसरा विवाह राज्य विस्तार की योजना के लिए होता है।[11] वत्सराज उदयन का यौगन्धरायण प्रमुख आमात्य या प्रधानमंत्री है। यौगन्धरायण उदयन का मित्र भी है। विदूशक या वसन्तक उदयन का परम मित्र है।

अतः वत्सराज उदयन एक कुशल राजा है जो प्रजा प्रिय, ईमानदार, दयालु, मृगया प्रेमी, परोपकारी, कलाप्रिय गुणों से सम्पन्न है।

रत्नावली नाटिका में सिद्धे वर यह भविश्यवाणी करते है कि "जो कोई भी पुरूश रत्नावली से विवाह करेगा वह चक्रवर्ती सम्राट बनेगा।" यौगन्धरायण की योजनानुसार रत्नावली का विवाह राजा उदयन से हो जाता है। यौगन्धरायण राज्य विस्तार एवं वत्सदेश के अधिकांश भाग को भात्रु आरूणि से मुक्त कराने के लिए यह योजना बनाते है, इस योजना को पूर्ण करने में महारानी पद्मावती भी मंत्री यौगन्धरायण का सहयोग करती है। इसके लिए वह दोनों राजा उदयन से क्षमा याचना करते है। इस प्रकार नाटिका का सुखदः अन्त हो जाता है।

जैसा की रत्नावली की प्रस्तावना से ही स्पश्ट है कि उदयन का राज्य सभी दिशाओं में था –

राज्यं निर्जितशत्रु योग्यसचिवे न्यस्तः समस्तो भरः
सम्यक् पालनललिताः प्रशमिताशोपसर्गाः प्रजाः।
प्रद्योतस्य सुता वसन्तसमयस्त्वं चेति नाम्ना धृतिं
कामः काममुपैत्वयं मम पुनर्मन्ये महानुत्सवः।।[12]

वत्सराज उदयन सभी दिशाओं को जीत कर अपने राज्य का विस्तार किया और सम्पूर्ण राज्य की भाासन व्यवस्था अपने मंत्रियों को सौंप कर रसिक या भोग–विलास रत हो गये है।

राजा उदयन एक आदर्श नृपति एवं प्रेमी हैं। उनकी सरसता एवं सहृदयता इन दोनों पक्षों को पुश्ट कर देती है। वे अत्यन्त उत्साही, कर्त्तव्यपरायण, प्रजापालक, ललितकलाओं के प्रेमी, प्रेमिल धार्मिक, विनयी, सु ीाल एवं धीरललित नायक हैं।

धीरललित नायक के लक्षण :
उदयन राजसी कुल में उत्पन्न, वीर क्षत्रिय योद्धा है। राजा उदयन अत्यन्त सौन्दर्य ााली, बुद्धिवान्, पराक्रमी, समुद्र के समान गम्भीर–धीर नायक है। वत्सराज उदयन को धीरललित नायक की श्रेणी में रखा है। धीरललित नायक के लक्षण इस प्रकार है –

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार नायक के लक्षण–

त्यागी कृती कुलीनः सुश्रीको रूपयौवनोत्साही।
दक्षोऽनुक्त लोकस्तेजा वैदग्ध्य शीलवान्नेता।।[13]
नेता विनीतो मधुरस्त्यागी दक्षः प्रियंवदः।
रक्तलोकः शुचिर्वाग्मी रूढ़वंशः स्थिरो युवा।।
बुद्धयुत्साह स्मृतिप्रज्ञा कलामान समन्वितः।
शूरो दृढश्च तेजस्वी शास्त्रचक्षुश्च धार्मिकः।।[14]

वत्सराज उदयन सर्वगुण सम्पन्न धीरललित नायक है। जो दशरूपकम् की इस कारिका से प्रमाणित होता हैं–

निश्चिन्तो धीरललितः कलासक्तः सुखी मृदुः।[15]

अर्थात् चिन्तारहित, गीत आदि कलाओं का प्रेमी, सुखी और कोमल स्वभाव तथा आचार वाला नायक धीरललित कहलाता है।

साहित्यदर्पणकार ने धीरललित नायक का लक्षण इस प्रकार बताया है–

निश्चिन्तो मृदुरनिशं कलापरो धीरललितः स्यात्।[16]

उदयन में कलाप्रिय, मृदु, दर्शनीय और विलासप्रिय आदि सभी गुण विद्यमान हैं।

अतः उदयन में नायक के सामान्य गुण ये हैं– त्यागी, विद्वान्, कुलीन, समृद्ध, युवक, उत्साही, चतुर, लोकप्रिय, तेजस्वी एवं निपुण। उदयन में धीरललित नायक के कलाभिज्ञता, सौन्दर्यउपासना, आदर्श प्रेमी, मधुर भाशी आदि गुण भी हैं।

यद्यपि उदयन में धीरललित नायक के गुण हैं; अपितु इसका आ ाय यह नहीं कि उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश समय नायिकाओं से प्रेम करने, भाराब–सुरा पीने, दुर्व्यसनो एवं मनोरंजन, महोत्सव, रति क्रीडाओं आदि में व्यतीत कर दिया होगा। क्योंकि नाटिका की प्रस्तावना में कहा गया है कि राज्यं निर्जितशत्रु .... पुनर्मन्ये महानुत्सवः।

अर्थात् वत्सराज उदयन सभी दिशाओं को जीत कर अपने राज्य का विस्तार किया और सम्पूर्ण राज्य का राज्यभार, राज्यकार्य या भाासन व्यवस्था अपने मंत्रियों को सौंपकर कुछ समय आनन्द में बिताने लगे। मनोरंजन हेतु रसिक क्रीडाओं या भोग–विलास रत हो गये है।

वत्सराज उदयन धीरललित नायक होते हुए भी महान्, वीर, पराक्रमी, कुशल योद्धा, योग्य प्रशासक आदि गुणों से सम्पन्न नायक थे। उदयन ने आरूणि पर विजय प्राप्त करके तथा रत्नावली से विवाह करने पर

चक्रवर्ती सम्राट् की उपाधि धारण की है। उदयन के राज्य के प्रधानमंत्री यौगन्धरायण थे। जो अत्यन्त बुद्धिमान् राजनीतिज्ञ, कूटनीतिज्ञ एवं नीति–निपुण मंत्री थे। जिसके कारण उदयन का राज्य उत्तर से दक्षिण तक फैला हुआ था।

ऐसा राजा उदयन के सन्दर्भ मे महाकवि भास, कवि अनंगहर्श, आदि कवियों का भी मत है। उन्होंने भी राजा उदयन को धीर ललित नायक के रूप मे चित्रित किया है। अतः हम कह सकते हैं कि श्री हर्श और वत्सराज दोनों ही भारत के प्रसिद्ध राजाओं में से एक हैं।

सन्दर्भ– ग्रन्थ :

I. प्रियदर्यािका, मिश्रः पण्डित श्रीरामचन्द्र, प्रस्तावना पृ0सं0–३

II. रत्नावली, द्विवेदी डॉ0 शिवबालक, प्रस्तावना पृ0सं0–१

III. प्रियदर्शिका, मिश्रः पण्डित श्रीरामचन्द्र, प्रस्तावना पृ0सं0–३ –४–५

IV. प्रियदर्शिका, मिश्रः पण्डित श्रीरामचन्द्र, प्रस्तावना पृ0सं0–३ –४–५

V. प्रियदर्शिका, मिश्रः पण्डित श्रीरामचन्द्र, प्रस्तावना पृ0सं0–३ –४–५

VI. प्रियदर्शिका, मिश्रः पण्डित श्रीरामचन्द्र, प्रस्तावना पृ0सं0–३ –४–५

VII. रत्नावली, द्विवेदी डॉ0 शिवबालक , प्रस्तावना पृ0सं0–२–३

VIII. स्वप्नवासवदत्तम्, त्रिपाठी डॉ0 रूपनारायण, प्रस्तावना पृ0सं0–१0,१३,१४

IX. प्रतिज्ञायौगन्धरायण, रायः डॉ0 गंगासागर, प्रस्तावना पृ0सं0–२८

X. स्वप्नवासवदत्तम्, त्रिपाठी डॉ0 रूपनारायण, प्रस्तावना पृ0सं0–१४

XI. रत्नावली की प्रस्तावना, कथावस्तु।

XII. रत्नावली, भट्टाचार्य व्रजरत्न, प्रथमः अंक, पद्य सं0–१0

XIII. दशरूपकम्, शास्त्रिणा डॉ0श्रीनिवास, द्वितीयःप्रकाशः –२ / १,२

XIV. दशरूपकम्, शास्त्रिणा डॉ0श्रीनिवास, द्वितीयःप्रकाशः –२ / ३

XV. साहित्यदर्पणः, आचार्य विश्वनाथ, शश्ठः परिच्छेदः –६ / ३४

XVI. स्वप्नवासवदत्तम्, रेग्मीः आचार्य श्री शेशराज भार्मा, प्रस्तावना पृ0सं0–३८